Faridabad Plot Built Properties in all Sectors

SYNDICATE
ESTATE AGENCY
Ind. Plot no. 11,
Sector-15A, Faridabad.
Ph. : (o) 2284588
(R) : 2224288

Spl. In - Residential, Commercial & Industrial

मेहनतकशों का पैग़ाम
Email : mazdoormorcha@yahoo.co.in
मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

पाक्षिक

नेट पर उपलब्ध :
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06/R.N.I. No. 66400/97

ANCHOR ROADLINES
(Regd) SCO - 29, Shoping Centre, Sec. - 11D, FBD.
Daily Parcel Service
For : Noida, Surajpur, Kasna, Ghaziabad, Haridawar, Gurgaon, Manesar, Dharuhera, Bhiwadi, Vice Varsa
24, Hours Service
Phones : 2285044, 2291388

वर्ष 26 अंक 7 फरीदाबाद, शनिवार, 16-28 फरवरी 2013 फोन : - 9999595632 सहयोग राशि 2 रुपया

बी.के. अस्पताल पी एम ओ मेहता को मंत्री शिवचरण शर्मा का संरक्षण ?

पिछले करीब ढाई साल से ज़िले के प्रमुख बादशाह खान अस्पताल को लूट एवं अव्यवस्था का अड्डा बनाये बैठे डा. ओम प्रकाश मेहता के काले कारनामों को ले कर जब कुछ लोग राज्य के स्वास्थ्य मन्त्री राव नरेन्द्र सिंह के पास पहुंचे तो उन्होंने साफ़ कहा कि शहर से निर्वाचित श्रम मंत्री शिवचरण लाल शर्मा जब तक नहीं चाहेंगे वे इस पी एम ओ को यहां से बदल नहीं सकते। यह बात सही भी हो सकती है क्योंकि किसी भी विभाग का मन्त्री अपने अधीनस्थों के तबादले व तैनातियां करते समय स्थानीय विधायकों अथवा मन्त्रियों की इच्छाओं को प्राय: नज़रंदाज़ नहीं करते। लेकिन इस आड़ में किसी अधिकारी को लूटने खाने का खुला परमिट भी नहीं दिया जाना चाहिये।

ठीक है, यदि शर्मा जी पी एम ओ मेहता का तबादला नहीं करने दे रहे तो स्वास्थ्य मन्त्री होने के नाते वे उनके कुकृत्यों की जांच करा कर उन्हें निलम्बित तथा बर्खास्त तो कर ही सकते हैं। इसके लिये तो शर्मा जी ने उनकी कलम नहीं पकड़ रखी। दरअसल एक मन्त्री द्वारा दूसरे की आड़ ले कर अपना धंधा चलाने का यह

जुगाड़बाजी से तैनात

ठीक है, यदि शर्मा जी पी एम ओ मेहता का तबादला नहीं करने दे रहे तो स्वास्थ्य मन्त्री होने के नाते वे उनके कुकृत्यों की जांच करा कर उन्हें निलम्बित तथा बर्खास्त तो कर ही सकते हैं। इसके लिये तो शर्मा जी ने उनकी कलम नहीं पकड़ रखी।

भी एक आधुनिक तरीका है। सरकार द्वारा भारी मात्रा में पैसा खर्च करने के बावजूद केवल एक पी एम ओ ने पूरे अस्पताल का सतयानाश कर रखा है। कोई दिन ऐसा नहीं जाता जिस दिन किसी न किसी अखबार में इसका कोई न कोई कांड छपा न मिले। कभी गर्भवती महिला को दाखिला न मिलने पर अस्पताल के दरवाजे पर ही डिलिवरी होती है तो कभी डिलिवरी के तुरन्त बाद जच्चा-बच्चा को बिस्तर से उठा कर बाहर फ़ेंक दिया जाता है। पिछले दिनों पलवल अस्पताल में लेडी डॉक्टर के न होने की वजह से एक नाबालिग का बलात्कार केस यहां भेजा गया था। इस रिश्वतखोर पी एम ओ ने पूरे 7 दिन तक उस बेचारी की मेडिकल जांच तक नहीं होने दी।

लड़की पक्ष ने इसके हाव भाव पहचान कर जब इसकी निगरानी शुरू की तो उन्होंने इसे आरोपी पक्ष से सौदेबाज़ी करते पकड़ लिया, जिसका उन्होंने एम एम एस भी बना लिया। इतना ही नहीं जब लड़की पक्ष वालों ने इसे दफ़्तर में ही खूब गालियां दीं तथा हाथापाई पर उतर आये तब कहीं जा कर लड़की का मेडिकल परीक्षण हो पाया। लेकिन 7 दिन बाद हुए मेडिकल परीक्षण में क्या निकलता है यह समझना कठिन नहीं है। बस इसी बात के पैसे इस चोर ने खाये थे। बिजली संकट को देखते हुए सरकार ने यहां 350 के वी का जनरेटर सैट लगवा रखा है। इसमें 31 लिटर डीज़ल एक बार में डलता है जिससे यह 45 मिनट तक चल पाता है।

अपराधी गिरोह से जुड़ा था एक डी एस पी

फ़रीदाबाद (म.मो.) पुलिस चाहे तो अपराध नियन्त्रण कोई कठिन कार्य नहीं, लेकिन जब अपराधियों को पकड़ने वाली पुलिस ही उनसे मिल जाये तो अपराधों की कोई सीमा नहीं रहती। मेवात में सीमा से बाहर जाते अपराधों का कारण खोजते हुए रिवाड़ी रेंज के आई जी ओ पी सिंह को हथीन में तैनात अपने एक डीसीपी ज़िले सिंह पर शक हो गया कि वह मेवात के एक बड़े डकैत गिरोह से मिला है। करीब 2-3 माह पूर्व शक के आधार पर उसका फ़ोन टैप करने पर शक सही साबित हो गया। इसके बावजूद डी एस पी पर मुकदमा दर्ज करके उसे हवालात भेजने की बजाय आई जी साहब ने उसकी शिकायत उच्चाधिकारियों को कर दी। उन्होंने सज़ा के तौर पर उसका तबादला भौंडसी कर दिया। जाहिर है उसका जरूर कोई न कोई राजनैतिक जुगाड़ होगा, जिसके चलते वह फ़िलहाल कुछ दिन भौंडसी पुलिस लाइन में काट लेगा और फिर मामला पुराना व ठंडा पड़ने पर पुन: लूट पाट की तैनाती पा लेगा। इस बाबत डी एस पी का कहना है कि वह तो फ़ोन पर अपराधी सरगना को केवल सरेंडर करने की सलाह देता था। डी एस पी ज़िले सिंह की अपराधी गिरोह से सांठ-गांठ कोई अपवाद नहीं है। हां, अपवाद केवल इतना है कि उसकी सांठ-गांठ पुख्ता सबूत के साथ पकड़ी गयी है। इसके बावजूद भी सज़ा के तौर पर जब केवल तबादला ही हुआ तो उन अनगिनत पुलिस वालों के हौंसले बढ़ना स्वाभाविक है जो इस तरह की सांठ-गांठ में लिप्त रहते हैं। ऐसा नहीं है कि इस तरह के पुलिसकर्मियों का किसी को ज्ञान नहीं है, उच्चाधिकारियों से ले कर राजनेताओं तक सब को पता है कि कौन क्या कर रहा है। लेकिन राजनीतिक इच्छा शक्ति के अभाव के चलते किसी के विरूद्ध कोई उचित कार्यवाही नहीं हो पाती।

बढ़ते अपराधों की दुहाई दे कर सदैव महकमें में पुलिसकर्मियों व संसाधनों की कमी का रोना रोया जाता है। इसके फ़लस्वरूप महकमें का बजट बढ़ाया जाता है। जहां कभी एक अफ़सर होता था वहां दस-दस बैठा दिये गये हैं लेकिन फिर भी जनता को अपराधों से कोई राहत नहीं मिल पा रही, जाहिर है संख्या एवं साधन मात्र बढ़ाने से कुछ होने जाने वाला नहीं है। जब तक महकमे में बढ़ती जा रही काली भेड़ों को हलाल नहीं किया जायेगा कुछ भी होने वाला नहीं।

ऐसा भी नहीं है कि ये काली भेड़ें केवल सिपाही से ले कर डी एस पी स्तर तक ही मौजूद हैं, इस तरह की भेड़ें तो डी जी स्तर के पांतों में भी मौजूद हैं और जब तक ऊंची पातों में बैठी काली भेड़ों को हलाल नहीं किया जायेगा तब तक छोटे मोटे कर्मियों पर कार्यवाही से कोई लाभ होने वाला नहीं।

ऐसा भी नहीं है कि ये काली भेड़ें केवल सिपाही से ले कर डी एस पी स्तर तक ही मौजूद हैं, इस तरह की भेड़ें तो डी जी स्तर की पांतों में भी मौजूद हैं और जब तक ऊंची पातों में बैठी काली भेड़ों को हलाल नहीं किया जायेगा तब तक छोटे मोटे कर्मियों पर कार्यवाही से कोई लाभ होने वाला नहीं।

कपूर, विर्क का जाना तथा चावला का आना

फ़रीदाबाद (म.मो.) करीब 15 माह तक ज़िले के सी.पी (पुलिस आयुक्त) रहे शत्रुजीत कपूर का तबादला बतौर आई.जी. रेंज हिसार का हो गया है। दिनांक 31 अक्टूबर 2011 को जब उनकी तैनाती यहां हुई थी तो समझा गया था कि शहर की कानून व्यवस्था सुधारने के लिये सरकार ने एक अच्छे ईमानदार व कर्मठ अफ़सर को भेजा है। लेकिन उनकी कार्यशैली ने जनता को न केवल निराश किया बल्कि उनके पूर्ववर्ती प्रशांत कुमार अग्रवाल को अच्छा कहलवा दिया।

कपूर के इस कार्यकाल में अपराध का ग्राफ़ बाकायदा बढ़ता रहा, भारी भरकम ट्रैफ़िक पुलिस तैनात होने के बावजूद यातायात में कोई सुधार नज़र नहीं आया, जगह-जगह जाम की स्थिति बनी रहती थी। टैफ़िक पुलिस द्वारा मंथली उगाही का सिलसिला बदस्तूर जारी रहा। थाने चौकियों में दी जाने

उम्मीदों पर खरे नहीं उतरे

वाली दरखास्तों की रसीद प्रणाली तो जरूर शुरू की गयी लेकिन उसका परिणाम जीरो रहा क्योंकि रसीद देने के बावजूद कार्यवाही कोई नहीं हुई। शिकायत करने पर वे कोई कार्यवाही करने की बजाये शिकायत पत्र को घुमाफ़िरा का वापस उसी थाने चौकी

विर्क के कार्यकलापों को देखते हुए उनकी पदोन्नति तो दूर उन्हें इस नौकरी में भी नहीं रखा जाना चाहिये था। लेकिन फ़िर भी शुक्र यह है कि उन्हें यहां का सी पी जिसके लिये वे मुंह धोये बैठे थे, न लगा कर भौंडसी भेज दिया गया। परन्तु ऐसे 'कलाकार' लोग बहुत दिनों तक भौंडसी जैसी जगहों में नहीं रहा करते, जल्द ही कोई जुगाड़ लगाकर बढ़िया लूट वाली तैनाती पा ही लेते हैं।

पहुंचा देते थे। उनका दफ़्तर महज मुख्य डाकखाना बन कर रह गया था।

पुलिस द्वारा अपराधियों को पकड़ कर बरामद माल को डकारने तथा रिश्वत लेकर उन्हें छोड़ने के अनेकों मामले प्रकाशित होने के बावजूद वे कभी कुछ कर नहीं पाये जिससे

कोई उम्मीद भी नहीं है

अपराधियों के हौंसले बुलंद से बुलंदतर होते चले गये। उनकी कार्यशैली से जाहिर होने लगा था कि उनका अपने मातहतों पर कोई खास नियन्त्रण नहीं था। उनके ज्वायंट सी पी नवदीप विर्क ने तो कमाल ही कर दिया था। उनकी कारगुजारियों से लगने लगा था कि वे अपने सी पी से पूर्णतया मुक्त हैं। वे अपने निजी स्वार्थों की पूर्ति हेतु कोई भी गैर कानूनी कार्य तथा किसी को प्रताड़ित करने से कतई परहेज नहीं करते थे।

कपूर का उनसे दब कर रहना कई प्रश्न चिन्ह खड़े करता है। विर्क के कार्यकलापों को देखते हुए उनकी पदोन्नति तो दूर उन्हें इस नौकरी में भी नहीं रखा जाना चाहिये था। लेकिन फ़िर भी शुक्र यह है कि उन्हें यहां का सी पी, जिसके लिये वे मुंह धोये बैठे थे, न लगा कर भौंडसी भेज दिया गया। परन्तु ऐसे 'कलाकार' लोग बहुत दिनों तक भौंडसी जैसी जगहों में नहीं रहा करते, जल्द ही कोई जुगाड़ लगाकर बढ़िया लूट वाली तैनाती पा ही लेते हैं। कपूर के बदले नवनियुक्त सी पी अरशिंदर सिंह चावला की पूर्व तैनातियों का रिकार्ड देखते हुए इनसे भी किसी बेहतरी की आशा नहीं की जा सकती।